मई 2020

सामान्य ज्ञान दर्पण

वर्ष 33 दशम् अंक

इस अंक में...

7 सम्पादकीय

विशेष स्तम्भ

9 समसामयिक सामान्य ज्ञान

14 आर्थिक परिदृश्य

19 राष्ट्रीय परिदृश्य

22 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

28 क्रीड़ा जगत्

30 रोजगार समाचार

32 वायरस का उत्पादन एवं खतरा

34 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

35 विज्ञान समाचार

38 अनुप्रेरक युवा प्रतिभा

39 सारभूत तत्व कोष

43 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न

लेख

46 समसामयिक लेख—जलवायु परिवर्तन और सामाजिक जीवन

48 सामयिक लेख—14वीं ऐन्युअल स्टेट्स ऑफ एजूकेशन रिपोर्ट 2019 'अर्ली इयर्स' जारी

50 प्रदूषण लेख—काल बनता प्लास्टिक का प्रयोग

52 कॅरियर लेख—एनडीए तथा नौसेना अकादमी परीक्षा (I), 2020 द्वारा ऑफीसर बन देश की सेवा करें

55 जीव-जगत् लेख—पक्षियों की घटती आबादी—सं. रा.सं. की रिपोर्ट

56 आहार लेख—कुपोषण आखिर कब तक ?

हल प्रश्न-पत्र

58 केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2019 (द्वितीय प्रश्न-पत्र: कक्षा VI से VIII तक)

70 एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी (10+2) लेवल (प्रथम चरण) परीक्षा, 2018

78 छत्तीसगढ़ प्री.बी.एड. परीक्षा, 2019

85 बिहार एस.एस.सी. इण्टरमीडिएट स्तर प्रारम्भिक परीक्षा, 2018

93 उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग ट्यूबवैल ऑपरेटर परीक्षा, 2018

104 मध्य प्रदेश खण्ड प्रसार अधिकारी समूह 1 (उपसमूह-3) संयुक्त परीक्षा, 2017

116 उत्तराखण्ड वन आरक्षी (समूह ग) सीधी भर्ती परीक्षा, 2020

विविध/सामान्य

121 भारतीय इतिहास—एनसीईआरटी मंत्रा : विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षा के लिए उपयोगी

127 ज्ञान वृद्धि कीजिए

128 केन्द्र सरकार की प्रमुख योजनाएं एवं कार्यक्रम : एक दृष्टि में

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **-सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सम्पादकीय

मानव बनने की राह पर चलिए

''कितना ही छोटा आदमी क्यों न हो, उसे कभी मनुष्य से हीन मत समझना. यही समझना कि वह महान् मानव जाति का एक घटक है. किसी विशिष्ट जाति, कौम, राष्ट्र या देश का है, ऐसा कभी मत सोचना.''

– रबीन्द्रनाथ ठाकुर

प्रत्येक मनुष्य 'मानव' की आत्मा लेकर जन्म लेता है, यह बात दूसरी है कि समस्त मनुष्यों की आत्मा अथवा आत्म तत्व का विकास समान रूप से नहीं होता है. विकास के स्तर की असमानता के मूल में कई हेतु कारण स्वरूप रहते हैं. इसमें पूर्व जन्मों की शृंखला को प्रधानता दी जाती है. इसी कारण वह शासन पद्धति आदर्श शासन पद्धति मानी जाती है, जिसमें प्रत्येक मनुष्य को पुरुष एवं नारी को असमान विकास के लिए समान अवसर प्राप्त होते हैं.

इतिहास साक्षी है कि हमारे पूर्वजों में अनेक असाधारण पुरुष-नारी अथवा श्रेष्ठ मानव हुए हैं. इस शताब्दी में भी हमने अनेक ऐसे नर-नारियों को पाया है, जो मानव या महामानव कहे जाते हैं. मानव-निर्माण की परम्परा अबाध, अखण्ड एवं सनातन है. वर्तमान काल में मानव-निर्माण की परम्परा शिथिल हो गई है और हम कभी-कभी कह उठते हैं कि आजकल वह प्रतिभा लुप्तप्राय हो गई है, जो मनुष्य को मानवता की ओर उन्मुख करती है. हमारे युवा वर्ग को भविष्य का कर्णधार बनना है, शासक, प्रशासक, समाजसेवी आदि रूपों में. अतएव हमारे युवक-युवतियों का यह कर्तव्य है कि वे प्राणपण से मानव अथवा महान् व्यक्ति बनने का प्रयत्न करें. कुछ व्यक्तियों का कहना है कि मानव की शक्ति, गरिमा, उसके आत्मविश्वास, शौर्य, पराक्रम, सामर्थ्य आदि लुप्त हो गए हैं. अपूर्व पुरुषार्थ सम्पन्न मनुष्य आज निर्बल, असहाय, दरिद्र, व्याकुल, हीन, पीड़ित एवं संत्रस्त अनुभव करने लगा है. ऐसा प्रतीत होता है कि मानव महानता की कुंजी को कहीं रखकर वह भूल गया है. विशाल ब्रह्माण्ड की सापेक्षता में वह लघुत्व का अनुभव भले ही करने लगा है, परन्तु महान् बनने की तड़प कुछ कर गुजरने की छटपटाहट हमारे युवा वर्ग में प्रायः देखने को मिल जाती है. अधिक-से-अधिक हम यह कह सकते हैं कि आज इस बात की महती आवश्यकता है कि युवा वर्ग को आवश्यक प्रेरणा प्रदान की जाए, महानता की कुंजी उसको इंगित की जाए– यह कहकर ''का चुप साध रहेहु बलवाना,'' हमारे युवा वर्ग को सलीम जिब्रान के इस कथन पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए–''मानव की महत्ता इसमें नहीं है, जो कुछ वह प्राप्त कर लेता है, बल्कि उसमें है, जिसे वह प्राप्त करने की आकांक्षा करता है.''

हिन्दी के उपन्यास सम्राट् प्रेमचन्द ने लिखा है कि ''मानव चरित्र न बिलकुल श्यामल होता है और न बिलकुल धवल. उसमें दोनों रंगों का विचित्र सम्मिश्रण होता है. स्थिति अनुकूल होने पर मनुष्य ऋषि तुल्य हो जाता है और प्रतिकूल होने पर वह नराधम बन जाता है.'' हमारे विचार से मानव बनने का, श्रेष्ठ मनुष्य बनने का सर्वमान्य उपाय यह है कि हम अपने दोषों को पहचानें और उनको दूर करने का प्रयत्न करें. साथ ही सद्गुणों का विकास करें, अवगुणों का प्रक्षालन स्वयं ही सद्गुणों को जन्म दे देता है. स्थिति परिस्थितियाँ स्वयं में न अनुकूल होती हैं और न प्रतिकूल होती हैं. हमारा विवेक उन्हें अनुकूल अथवा प्रतिकूल बना देता है. उदाहरणार्थ सन् 1947 में कश्मीर की समस्या को यदि संयुक्त राष्ट्र संघ में न ले जाया गया होता, तो आक्रमणकारियों को खदेड़ कर परिस्थिति को सर्वथा, अनुकूल बनाया जा सकता था. एक ही ग्रह नक्षत्र में अनेक बालक-बालिकाओं का जन्म होता है. उनकी परिस्थितियाँ समान होती हैं, परन्तु उनकी उपलब्धियाँ भिन्न होती हैं–

स्पष्ट है कि मानव जिस मार्ग पर चलकर दिव्य या महान् बनता है, उसकी कुंजी उसके पास रहती है. यह बात दूसरी है कि वह प्रमादवश यह समझ बैठे कि कुंजी उसके पास नहीं है. हम यहाँ यह निवेदन कर देना आवश्यक समझते हैं कि जिन मार्गों पर चलकर हमारे पूर्वज या अग्रज महान् बने थे, उन्हीं मार्गों पर चलकर ही हम महान् बन सकेंगे. हम पुरातन गरिमा को प्राप्त करने का प्रयत्न अवश्य करें, परन्तु पुरातनवादी बनकर नहीं, अपने व्यक्तित्व तथा देशकाल के अनुरूप आचरण करें. जीवन मूल्य प्रायः शाश्वत रहते हैं, परन्तु उनको जीवन में ढालने की पद्धति व्यक्ति सापेक्ष होती है. हम शाश्वत जीवन-मूल्यों को पहचानें एवं निर्धारित आदर्शों को प्राप्त करने के लिए अपने अनुकूल मार्ग का चयन, निर्माण एवं अनुसरण करें यह हमारा सौभाग्य है कि हमारा युवा वर्ग आँख मूँद कर चलने को, हर प्राचीन आस्था को बिना तौले स्वीकार करने को तैयार नहीं है. वह केवल उस सत्य को अपनाने को तैयार हैं, जो तर्क तथा सत्य पर आधारित हों.

पुरातन सभ्यताएं इतनी ऊँचाइयों तक क्योंकर उठ सकी थीं, इस रहस्य को जानना परम् आवश्यक है, वह रहस्य ही तो वस्तुतः महानता की कुंजी है. वह कुंजी यह है कि कतिपय शाश्वत मूल्यों एवं श्रेष्ठ आधार पर ही जीवन को चलाने पर महानता की उपलब्धि की जा सकती है. किसी भी काल के, किसी भी देश के मानव-रत्नों की जीवनी का विश्लेषण करने पर सर्वथा स्पष्ट रूप से विदित होता है कि जब-जब उन शाश्वत मूल्यों का अनुसरण किया गया तब-तब दिव्य व्यक्तियों एवं श्रेष्ठ समाजों का निर्माण हुआ है. अवसरवादिता द्वारा प्रेरित हम जब मूल्यों से समझौता करने लगते हैं. तब व्यक्ति एवं समाज दोनों पराभव की ओर उन्मुख हो जाते हैं.

दिव्य गुणों से हमारा तात्पर्य है मानवोचित गुण वे गुण जो हमारी अन्तर्निहित मानवता को उभारते हैं और उसकी प्रेरणा के अनुसरण को विवश करते हैं. मानवता का अर्थ देवत्व की प्राप्ति अथवा आसमान की ओर के जाने वाले मार्ग की प्राप्ति नहीं है. मानवता का अर्थ है श्रेष्ठ मानव बनना, अभेद बुद्धि एवं प्रेम का विकास करना. उर्दू के शायर मीर ने एक जगह स्पष्ट लिखा है कि मानव का फरिश्ता बनना आसान है, उसका मानव अथवा इन्सान बनना दुश्वार (अत्यन्त कठिन) होता है. ठीक ही कहा गया है–''मानव का दानव होना उसकी पराजय है, मानव का महामानव या फरिश्ता बनना उसका चमत्कार है और मनुष्य का मानव होना उसकी जीत है.''

प्रकृति ने केवल मनुष्य को ये विशेष शक्तियाँ प्रदान की हैं–मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक, कलात्मक संवेदनशीलता तथा विवेकशीलता. इनमें किसी भी एक शक्ति का पूर्ण विकास महानता के मार्ग की कुंजी साबित हो जाएगा. आप अपनी इच्छा एवं सामर्थ्य के अनुसार उपर्युक्त किसी शक्ति के विकास में लग जाइए, महानता का द्वार आपके सम्मुख उन्मुक्त हो जाएगा. याद रखिए अभी तक पूर्ण मानव का निर्माण सम्भव नहीं हो सका है. अपने सार्थक प्रयत्नों द्वारा आप अपने मानव को मानवता की ओर एक कदम आगे ले जा सकते हैं. चीन देश की एक कहावत है–''संसार में दो ही व्यक्ति ऐसे हैं, जो सही शब्दों से मानव हैं–एक जो मर चुका है, दूसरा जिसका अभी तक जन्म नहीं हुआ है.'' ●●●